कोई अपना

मदमस्त बहती बयार की हल्की सी आहट से खिड़की के दोनो पल्ले पूरे खुल गए। भोर होने में अभी काफी देर थी। शांत व संयत बहती शीतल पवन के ताजे झोंके से डाक्टर अवनी का क्लांत व थका चेहरा धीमे से मुस्कुरा उठा। आज पुन: बहुत कश्मकश के पश्चात् वो एक नव प्राण को बचा पाई थी। सारे जतन के बावजूद उसे अन्त में सी सैक्शन करके बच्चे को बचाना पड़ा। उसकी पूरी टीम जिस तरह उसके साथ जुट जाती थी, वो इस बात पर स्वंय को भाग्यशाली मानती थी। सफलता प्राप्ति पर वो सबको शाबाशी देना कभी नहीं भूलती थी। स्टॉफ इसीसे सारी थकावट भूल जाता था व अवनि का साथ देने को सदैव तत्पर रहता था।

एकटक आकाश को निहारती , अपने ख्यालों में खोई अवनि सजग होकर सूर्य के प्रति ईर्ष्या से भर उठी। सूर्योदय में अभी काफी समय बाकि था, लेकिन उसके प्रकाश की मद्धिम रश्मियाँ नभ में चारों ओर फैलकर कण- कण को उसके आगमन का संदेश दे रहीं थीं। पक्षियों ने अपने नीड़ से बाहर निकलकर स्वागत गान प्रारम्भ कर दिए थे। पक्षियों के झुंड के झुंड पूर्व की ओर उड़ान भरते हुए मानो सूर्य के स्वागत के लिए उमड़ रहे थे। पत्तों पर बैठी ओस की बूँदें भी रात भर से मानो बेसब्री से राह तक रही थीं व अब मुस्कुरा रही थीं कि उनका अस्तित्व सूर्य के प्रकाश में चमक के उभरेगा। अपनी दीवानगी में उन्हें यह भी होश नहीं कि उसके कुछ ही पलों पश्चात् उनका अस्तित्व रहेगा ही नहीं। कहाँ झेल पाएगा वो सूर्य का ताप- - ? फिर भी लगे हैं सब सूर्य के आगमन की राह में पलकें बिछाए। एक अवनि है! -- - - इतनी बड़ी सफलता पाने पर भी उसके पास कोई नहीं है ईनाम देने को। क्या करेगी वो घर जाकर? कौन बैठा है वहाँ उसके इंतजार में पलकें बिछाए ? - - -उसका स्वागत करने को?घर की सूनी दीवारों में ठंडे पड़े बिस्तर पर जाकर उसने अपनी थकावट ही तो मिटानी है। काश! इस एकाकी जीवन में एक सबल कंधा होता! प्रेमपूर्ण कोई स्पर्श होता! ! एक मधुर मुस्कान का सहारा होता। अपना — हाँ, अपना कहने को वहाँ घर में कोई भी तो नहीं है। सिवाय चंद नौकरों के जो मात्र सेवक हैं। अवनि वहीं खुली खिड़की से बाहर शून्य को तकती ,अपने अर्न्तमन की पीड़ा को सहती हुई अतीत की गहराइयों में उतरती चली गई- - - - -

पापा को एक ही अरमान था कि अवनि पढ़ लिखकर डॉक्टर बने। वही उनका बेटा थी। बड़ी बेटी अदिति पढ़ाई में एवरेज थी। ग्रेजुएशन पूर्ण होते ही उसकी शादी कर दी गई थी। अवनि ने एम बी. बी. एस बहुत अच्छे नम्बरों से पास की। गायनी में स्पैशलाइज़ेशन के लिए उसे 'कॉरनैल यूनिर्वसिटी न्यूयार्क में एडमिशन मिल गई थी। वहाँ से लौटकर वो 'ऑल इंडिया मैडिकल साइंस' दिल्ली की प्रख्यात गॉयनोकॉलोज़िस्ट बन गई थी। अवनि की ममी ने तो रट ही लगा दी कि अब इस की भी शादी कर दी जाए। लेकिन इन बाप - बेटी के तो ढेरों सपने थे। इनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। कई अच्छे- अच्छे रिश्ते आए। एक से बढ़कर एक डॉक्टर भी अवनि के सम्पर्क में आए; लेकिन समय कहाँ था अवनि के पास कि दौड़ती जाती समय की रफ्तार में से दो पल निकालकर उस विषय में भी सोचे। अस्पताल से थकी माँदी घर आने पर वो मुस्कुरा कर माँ की बातें सुनती व हँसी में बात टाल देती थी। अवनि पर काम का व सफलता का नशा सवार रहता था। वहाँ हर जच्चा की इच्छा होती कि उसकी जचकी डॉ. अवनि ही करे। अवनि काम के भँवर में डूबती ही चली गई। दिन से रात- - - रात से फिर दिन , फिर नया केस, नई सलाहें, मीटींग्स, मरीजों के परेशान चेहरे और- - - उन्हीं में डूबते- उतराते उसे पता ही नहीं चला वो कब चालीस वर्ष की हो गई। जीवन गतिमान है - समय की गति के साथ आगे बढ़ता ही चला गया। तब का समय जो हाथ से फिसला तो आज तक उसकी पकड़ में नहीं आया।

इस बीच अदिति दीदी जब भी मायके आती तो बच्चों की किलकारियों से घर गूँज उठता। यह सब उसे बहुत भला लगता था। ये सब ही तो उसके अपने थे। अचानक एक दिन घर व फैक्टरी बेचकर दीदी व जीजाजी ने सिडनी (

ऑस्ट्रेलिया)जाने का निर्णय ले लिया। ममी पापा भी इस निर्णय से विचलित हो उठे। अपने दोहतों का विछोह उनके लिए असहनीय था। पिछले वर्ष उनका सिडनी जाने का प्रोग्राम बना। दीदी व जीजा का बहुत आग्रह था कि अवनि भी कुछ दिनों के लिए वहाँ के उन्मुक्त प्राकृतिक वातावरण में काम को भूलकर जीवन का आनन्द ले ले। नहीं छोड़ पाई वो अपने मरीज। उसकी गहन मानसिकता उसे कर्त्तव्य से बाँधे रखती। नहीं निकल पाती थी वो चाहकर भी इन सब से बाहर। 'होनी अटल है' सो अवनि अपने जीवन में जीने को रह गई अकेली— नितांत एकल जीवन जीने को। दिल्ली एयरपोर्ट जाते हुए ममी पापा की कार का ट्रक से ऐसा भयानक एक्सीडेंट हुआ कि वो दोनो बच नहीं सके। दीदी लोग आए व उसे भी वहीं चलने को कहा— लेकिन अवनि ; रह गई अपनी चाहरदिवारी में फड़फड़ाती, एकान्त भोगती , तन्हाइयों में स्वँय से बतियाती एवम् ज़िदंगी से गिले शिकवे करती।

जब तक वो अस्पताल में मरीजों से जूझती, उनके इर्द—गिर्द रहती– वो सब भूली रहती। काम पूरा होते ही वो अपनो के लिए झटपटाने लगती। अपनी तन्हाई से घबरा उठती। कुछ अधूरी हसरतें, उमंगें उसके भीतर दम भरती रहतीं। एक स्नेहालिंगन – –! ऐसा विश्वास जगानेवाला जो उसकी दिन रात की थकान मिटा दे। एक चौड़ा सीना– – जिस पर सिर टिकाकर वो पूर्ण जीवन जी ले। यही सब चाहते हुए उसकी कल्पनाएँ एक भरा पूरा परिवार पाने के लिए उड़ानें भरतीं। – – – ऐसी दोहरी मानसिकता से उसका दम घुटने लगता था।

कोई बहुत ही उलझा हुआ केस आने पर जब वो ज़िदंगी और मौत से जूझते हुए नव बाल जीवन की आहट को अपने दरवाज़े पर दस्तक देते हुए पाती तो वो अल्हाद से भर उठती। उनकी खुशी को साँझा करती। उन विजयी पलों में उसकी छाती गर्व से फूल जाती एवम् चेहरे पर एक गर्वीली मुस्कान खिल उठती। बस इन्हीं पलों को – वो किसी से बाँटना चाहती। लेकिन उसकी चाह घुट कर रह जाती। तड़प उठती थी वो अपनी बेबसी पर। काश! – – काश!! कोई तो अपना होता!

वहीं खड़े खड़े अवनि ने देखा – सुबह हो गई है। अपने वर्त्तमान में लौट उसने भरे मन से अपना बैग व पर्स उठाया। कार– पार्किंगं में जाकर कार स्टार्ट की और बिन सोचे ही फुल स्पीड पर कार बढ़ा दी। घर जाने को उसका मन कदापि नहीं था। मस्तिष्क शून्य था, लेकिन पाँव एक्सीलेटर पर दबाव डाले जा रहे थे बिन किसी मंज़िल के। थोड़ी ही देर बाद अचानक कार की ब्रेकें चरमरा उठीं। अवनि ने हैरानी से देखा कि वो मिसेस सुधा ओबेरॉय के घर के समक्ष थी। उसकी पेशेंट थीं वो। हारमोनल डिसार्डर से ग्रासित बेहद बिगड़े हालात में उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया था। तब तक खून बहुत जा चुका था। उनका बचना लगभग असम्भव ही था। ईश्वर की कृपा एवम् अवनि की सूझबूझ से वक्त रहते उन्हें बचा लिया गया था। डॉक्टर अवनि के सभी कायल हो गए थे। सुधा के पति आलोक ओबेरॉय तो अवनि के विशेष प्रशंसक बन गए थे। करीब बीस दिनों के लिए मिसेस ओबेरॉय अस्पताल में एडमिट रहीं। इस बीच सारा परिवार ही– – जिसमें उन की बड़ी बेटी तान्या शादीशुदा एवम् छोटी मान्या अभी पढ़ रही थी। ये सभी अवनि के अपने बन गए थे। आलोक तो डा. अवनि के सुबह के राउण्ड पर आने का बेसब्री से इंतज़ार करते थे। सुधा को फलों का रस पिलाते हुए उनकी आँखें द्वार पर लगी रहतीं थीं। उसके आने पर वो उससे बहुत आदर व आत्मीयता से बातें करते। वे अवनि का धन्यवाद करते थकते नहीं थे। इसके अलावा वो अवनि से प्रतिदिन के नए केसेस के बारे में भी अवश्य पूछते थे। अवनि की सूझबूझ से सफल होने पर वो उसे "ओह यू आर ग्रेट" कहते। आलोक बहुत ज़िदांदिल था। उनके मुँह से यह सुनना अवनि को अच्छा लगता था। उसे भी आलोक से मिलकर उन्हें सब सुनाने का इंतज़ार रहता। यह छोटा सा प्रशंसा सूचक भाव अवनि को नए हौंसले से भर देता। सुधाजी भी अवनि की बातें बहुत चाव से सुनतीं एवम् प्रसन्नता दिखातीं। उनकी बेटियां भी माँ के चेहरे पर आई प्रसन्नता देखकर डॉ. अवनि के प्रति कृतज्ञता से भर उठतीं थीं। सम्पूर्ण परिवार ही डॉ. अवनि का प्रशंसक बन गया था। अवनि को देखते ही उनमें आत्मीयता के भाव छलक उठते एवम् चेहरे खिल उठते थे।

उनके वहाँ रहते ही एक बार बहुत ही उलझा हुआ केस आया। बच्चे की गर्दन में नाड़ू उलझा हुआ था। डॉ. अवनि ने पेट न चीरकर केवल 'फॉरसिप' डिलीवरी से ही बच्चे को बिना किसी कट के डिलीवर कर लिया। असिस्टेंट डॉक्टर्स एवम् नर्सों ने अवनि की योग्यता की पूरे अस्पताल में धूम मचा दी। इस केस को निपटा कर शाम ढले घर जाने से पूर्व वो यूं ही ओबेरॉय परिवार से मिलने सुधाजी के कमरे में चली गई। शायद ! मन के किसी कोने में आलोक की प्रशंसक पंक्ति सुनने की इच्छा ने अँगड़ाई ले ली थी। आलोक सुधा को अन्तिम दवाई स्वंय देकर ही घर जाता था इसलिए वो वहीं था। ज्यूंही अवनि ने उनके कमरे में प्रवेश किया ; आलोक ने अति उत्साहित हो अवनि के दोनो हाथों को पकड़कर एकदम कहा, "ओह यू आर ग्रेट"। जोश जोश में वो सहज औपचारिकता भी भूल गए। उधर अवनि तो यही सुनने आई थी – – अपनी उपलब्धि पर प्रशंसा पाने। आलोक एवम् सुधा ने उसे मुबारक दी। तभी आलोक ने तपाक से कहा , 'चलिए उस शानदार सफलता पर आपको मौर्यास होटल में ट्रीट (दावत)देते हैं। क्या कहती हो सुधा?' सुधा ने भी प्रसन्न मुद्रा में हामी भरी व अपनी निर्बल और पीली पड़ी गहरी आँखों से उसे आलोक के साथ जाने को कहा। अवनि भी किसी अंजान शक्ति से खिंची उनका अपनत्व स्वीकारते हुए मान गई। अपने केबिन में वापिस जाकर तैय्यार होकर जब वो कार पार्किंग में पहुँची तो आलोक उसका ऐसा खिला रूप एवम् गुलाबी रंग के सलवार कुर्त्ते में उसे देखकर हैरान रह गया। कहाँ वो सफेद कोट लटकाए डॉ. वाली छवि और कहाँ यह खुले बाल एवम् गुलाबी परिधान! खिली मुस्कुराहट के साथ आलोक के मुँह से हठात् निकला, 'ओह यू आर ग्रेट'! इस पर दोनो ही मुस्कुरा उठे। इधर उधर की बातें करते वे मौर्यास पहुँचे। कार की चाबी वहीं अटैंडेंट को देकर वो बेहद आदर के साथ अवनि को लेकर लॉबी में पहुँचा। वहाँ एक कोने में खाली मेज देखकर दोनों वहीं बैठ गए। यूं ही इधर उधर की बातें करते हुए न जाने क्यूं वे एक दूसरे का मन पढ़ने का यत्न करते रहे। एक मुद्दत बाद अवनि उस रात खिली –खिली व प्रसन्नचित्त थी। आलोक जो पचास के करीब था,अपने उन्मुक्त स्वभाव एवम् खुशहाल मिजाज़ के कारण काफी कम लगता था। अधेड़ उम्र का अनोखा व्यक्तित्व लिए हुए था। बेतकल्लुफी आ गई थी बातों ही बातों में। "आप" का संबोधन 'तुम' पर पहुँच गया था। अच्छी दोस्ती हो चली थी दोनो में। बस उसी रात से ओबेरॉय दम्पति में उसे गहन अपनत्व का आभास होने लगा था। सुधा जी की हालत सँभल जाने पर जब उन्हें अस्पताल से छुटटी मिल गई थी तब अवनि उनकी कमी को वहाँ महसूसती थी।

आज भी तो अवनि ने हाई ब्लड प्रेशर वाली जच्चा की डिलीवरी कुशलता पूर्वक करके बहुत कशमोकश के बाद जच्चा एवम् बच्चा दोनो को बचा लिया था। जब अवनि की कार ओबेरॉयस के घर के सम्मुख जाकर रूक गई तो वहीं पर बैठी वो स्वंय पर मुस्कुरा उठी। ज्यूंही कॉल बैल बजने पर दरवाजा खुला — सामने अवनि को सुबह सवेरे देख कर आलोक तो मारे खुशी के 'वैल्कम— वैल्कम 'कह उठा। दोनो ने बैठकर इकट्ठे चाय पीने के बाद सुधा के कमरे में प्रवेश किया। सुधाजी बिस्तर पर सोई हुई बेहद कमजोर , आँखें भीतर को धँसी हुई— मानो बरसों से बीमार हों ऐसी दिख रही थीं। आहट सुनकर उन्होंने मुस्कुरा कर अवनि का स्वागत किया। अवनि ने उनका हाथ प्यार से सहलाते हुए कुछ नए टॉनिक लिखे। वो जिस सफलता को उनसे साँझा करने आई थी; सुधाजी की दशा देखकर उसका वो उत्साह जाता रहा। ख़ैर, नाश्ता तब तक लग गया था। आलोक अवनि ने संग संग नाश्ता किया। उसी दौरान आलोक ने रात भर की उपलब्धि के विषय में पूछा। अवनि एक उत्साही बच्चे की तरह उसे सब सुना ही गई। और आलोक के मुँह से हमेशा की तरह 'ओह! यू आर ग्रेट'निकला। बस! यही सुनने तो आई थी वो वहाँ। उसे लगा आज की मेहनत का ईनाम उसे मिल ही गया आखीरकार।

आलोक ने बताया कि कल दोनो बेटियां पुन: आ रही हैं। सो इस अपूर्व सफलता पर वो उसे कल ट्रीट

देगा। कल रात आठ बजे वो मौर्यास में उसी मेज पर उसका इंतज़ार करे। अवनि ने कहा कि ट्रीट अभी रहने दें। ये सब तो चलता ही रहता है, अभी सुधाजी ठीक नहीं हैं। लेकिन आलोक ने अवनि के चेहरे की चमक को पढ़ लिया था, सो वह नहीं माना।

अगले दिन अवनि अस्पताल में सारा समय खिली सी रही। उसे हर पल आनेवाली गहराती शाम का इंतज़ार बना रहा। सुबह घर से आते हुए वो शाम की पोशाक साथ ही ले आई थी। तकरीबन साढ़े सात बजे वो मौर्यास के बाहर पहुँच गई। जब आठ बजे और आलोक की कार नहीं दिखी तो उसने अपनी कार पॉर्क की व वहीं लॉबी में उसी मेज पर जा बैठी। वेटर के दो बार पूछने आने पर उसने स्ट्राबैरी क्रश में आईसक्रीम का ऑर्डर दे दिया। बेहद बेसब्री से वह आलोक की राह तकने लगी। तभी उसकी निगाह बाईं ओर गई जहाँ एम. एफ. हुसैन की वृहद आकार की पेंटिग्स विभिन्न देशों के राष्ट्रीय

झण्डों के नीचे मानव मात्र को दर्शा रहीं थीं कि मॉर्डन टैक्नॉलजी के चलते सदियों से मनुष्य का लम्बा सफ़र जिस मुकाम पर आकर आज रूका है वह किसी देश की सीमा का मोहताज नहीं था। मानव की सम्पूर्ण प्रगति समय एवम् इतिहास के संग रही है। चटकीले रंगों की कलाकारी बरबस ध्यान खींचती थी। पिछली बार यहाँ आने पर वो आलोक के साथ ही मस्त रही उसने आसपास कुछ भी नोटिस नहीं किया था। इस ख्याल के आते ही वो स्वंय ही मुस्कुरा कर झेंप गई। घड़ी देखी तो नौ से ऊपर समय हो रहा था। आख़ीर प्रतीक्षा की भी कोई सीमा होती है। उसे आलोक पर गुस्सा आने लगा। उससे झगड़ने को मन होने लगा। वेटर के पुन: आने पर उसने हारकर स्प्रिंगरोल एवम् कॅटलेट का ऑर्डर दे ही दिया।

पुन: प्रतीक्षा– – – !आख़ीर हारकर साढ़े दस बजे वो बिन कुछ खाए पीए बिल देकर घर वापिस आ गई। गुस्से में उसने आलोक को फोन भी नहीं किया। अपनी बेबसी व लाचारी पर वो फफक –फफक कर रो पड़ी। जब मन का गुबार आँसुओं की राह बह गया तो वह कुछ संयत हो आईने के सम्मुख जा बैठी। लगी स्वंय से ही बातें करने– – – क्यूं है वह इतनी बेचैन ? यदि आलोक नहीं आया तो क्या हो गया? आख़ीर वह भरे पूरे परिवार वाला है। उसे आलोक को देखने या उसके दो बोल सुनने की चाह क्यों है?आत्म विश्लेषण आवश्यक था। अपनी भावनाओं, अपनी चाहतों पर वो हैरान थी। उसके सम्पर्क में एक से बढ़कर एक लोग आए पर वह किसी के लिए भी बेचैन नहीं हुई थी। तो क्या– – – क्या वह

आलोक को चाहने लग गई है? आख़ीर इस चाहत का अंजाम – – – नहीं– – नहीं– – यह उचित नहीं है। उसकी भी कोई उम्र है इन सब बचकानी हरकतों के लिए– – ?

अपने मन को झूठी दिलासा देते हुए वह रात्रि की नीरवता को भंग करते हुए अपनी नासमझी की हँसी उड़ाते हुए जोर जोर से हंस पड़ी। अपने कोमल मन को कठोर शिला का रूप प्रदान करने का यत्न कर रही थी जो कि मात्र छलावा था। ख़ैर– – – भावों के अथाह सागर में डूबते उतराते, उचित अनुचित की लड़ाई लड़ते वह नींद की आग़ोश में समा गई – – तभी निजात मिला। अगले दिन वह जान बूझकर काम में व्यस्त रही। उसके अगले दिन उसे हर पल आलोक के फोन का इंतज़ार रहा, पर उसने स्वंय पर नियंत्रण रखा। हारकर तीसरे दिन उसने स्वंय ही ओबेरॉय निवास पर फोन करके कुशल क्षेम पूछी। मान्या की भीगी – भीगी आवाज़ में 'हैलो' सुनते ही अवनि का मन शंकित हो उठा। तभी आलोक ने फोन लिया। उस दिन मौर्यास न पहुंचने का जो कारण बताया, सुनकर अवनि विश्वास ही नहीं कर पाई। सारे गिले शिकवे भूलकर वह उसी क्षण अस्पताल से छुटटी लेकर उनके घर जा पहुँची। मालूम हुआ कि दोनों बेटियों के पहुँचने के बाद सुधाजी की हालत अचानक ऐसी बिगड़ी कि डॉक्टर के आने के पूर्व ही वे सब को रोता बिलख़ता छोड़कर सदा के लिए चली गईं। अवनि ने वात्सल्य से भर तान्या एवम् मान्या को अपने वक्ष से लगा लिया। वह स्वंय भी उनके साथ रोए जा रही थी। अवनि का स्नेह एवम् सौहार्दपूर्ण व्यवहार आत्मीयता से परिपूर्ण

था। वह लगातार तेरहवीं तक प्रतिदिन उन सब का दुख साँझा करने जाती रही। सभी नाते– रिश्ते के लोगों के जाने के पश्चात् तान्या अपने घर एवम् मान्या वापिस होस्टल जाने लगी तो उन्हें डैडी के अकेले होने की चिन्ता सताने लगी। वे दोनो इतना समझ गई थी कि अवनि आन्टी के आने से डैडी संयत रहते थे। दोनो को उनकी दोस्ती पसंद थी। तभी तो वे डॉ. अवनि से बोली कि उनके रहते उन्हें अब डैडी की चिन्ता नहीं है। अवनि यदा कदा आलोक से मिलती रहती थी। आलोक ने जान लिया था कि अवनि में उसे अपनापन मिलता है तभी उसको मिलकर वह खिल उठता है। इसी तरह अवनि की आँखों में भी यही भाव दिखाई देते थे। समय तो अपनी रफ्तार से भाग रहा था। उसे पकड़ने के लिए आलोक ने मन ही मन एक संकल्प लिया और चल पड़ा मंज़िल की ओर—

एक रात जब अवनि की नाईट ड्यूटी थी तो सुबह होने से पूर्व ही आलोक अस्पताल के बाहर अपनी कार में अवनि के बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहा था। वह बार – बार अपनी रिस्ट वॉच को कान से लगाता। उसे लगता वक्त थम गया है। प्रतीक्षा दूभर हो रही थी। उसकी आँखें मेन गेट पर थीं। तभी थके बोझिल कदमों से चलती अवनि कार पार्किगं की ओर बढ़ती दिखाई दी। सामने आलोक को अपनी कार का दरवाजा खोले इंतज़ार में खड़े देखकर मानो आलोक की आँखों की मूक भाषा से उसके मन की अर्न्ततम गहराइयों तक पहुँचते हुए वह यंत्रचलित सी जाकर उसकी बगल की सीट पर बैठ गई। आलोक ने मुस्कुराकर उसे आँखों में भर लिया। दोनो के मन के तार वीणा की मधुर ध्वनि से गूँज उठे। अवनि की बरसों की चाहत को ठौर एवम् दोनो को कोई अपना मिल गया था। आने वाली नई सुबह की रश्मियाँ चारों ओर प्रेम का संदेश लेकर आ रही थीं।

वीणा विज 'उदित'